# प्राक्कथन

# प्राक्कथन

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हिंदी साहित्य जगत् के अद्‌वितीय साहित्यकारों में से एक हैं। वे प्रमुखतः 'तीसरे सप्तक' के प्रमुख कवि हैं। इस कारण से एक कवि के रूप में इनका व्यक्तित्व अधिक उभरकर सामने आया। सर्वेश्वर जी ने प्रतिभा के बल पर हिंदी साहित्य की हर विधा में अपने व्यक्तित्व की अमीट छाप छोड़ी है। कविता के साथ-साथ इनका कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी तथा बाल-साहित्य आदि विधाओं में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में समाज व्यवस्था पर अधिक व्यंग्य है। समाज में जब अनिष्ट प्रथा, भ्रष्टाचार तथा भेद-भाव आदि स्थितियों का निर्माण हुआ था। उसे सर्वेश्वर जी ने उपन्यासों द्‌वारा यथार्थ रूप में सम्‌ाज के सामने लाने का प्रयास किया है। इस कारण इनके उपन्यासों में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य अधिक दिखाई देता है।

**विषय-चयन -**

हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है जिसमें वर्तमान युग के मनुष्य जीवन का समग्र विवेचन यथार्थ रूप में किया जाता है। इसी वजह से उपन्यास विधा के प्रति मेरी शुरू से ही रुचि रही है। स्नातकोत्तर पढ़ाई के दौरान मुझे हिंदी साहित्य के युग प्रवर्तक प्रेमचंद का 'गोदान','निर्मला', 'सेवासदन', अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी', राजेंद्र यादव का 'शह और मात' तथा सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' आदि वैविध्यपूर्ण कथावस्तु के उपन्यासों को पढ़ने का सुयोग मिला। इसमें सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के यथार्थ केंद्रित 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों के प्रति मैं विशेष आकर्षित हो गया। एम्. फिल. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् मैंने सर्वेश्वर जी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों पर शोध-कार्य करने का संकल्प किया। इस बारे में मैंने शोध-निर्देशक श्रद्‌धेय गुरु डॉ. मोहन जाधव जी से विचार-विमर्श किया। उनसे ज्ञात हुआ कि

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अब तक सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य नहीं हुआ है। तब उन्होंने मुझे सक्सेना जी के उपन्यासों की गहराई के बारे में सचेत किया और मेरी रुचि के अनुसार इस विषय को स्वीकृति दे दी। मैंने 'सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों का अनुशीलन' ('सूने चौखटे' और 'सोया हुआ जल' के विशेष संदर्भ में) इस विषय पर शोध-कार्य करने का दृढ़ संकल्प किया। अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के विवेच्य उपन्यासों के बारे में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए -

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?
2. सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु क्या है ?
3. क्या विवेच्य उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत किया गया है ?
4. विवेच्य उपन्यासों के पात्रों के चरित्र-चित्रण में सर्वेश्वर जी कहाँ तक सफल हुए हैं ?
5. विवेच्य उपन्यासों की भाषा-शैली कैसी है ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार के रूप में दे दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित पाँच अध्यायों में विभाजित किया है -

**प्रथम अध्याय - ''सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''**

प्रधानतः किसी भी साहित्यिक कृति के सम्यक अनुशीलन के लिए उस साहित्यकार के व्यक्तित्व का अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें मैंने सक्सेना जी के व्यक्ति-परिचय के अंतर्गत जन्म, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, दांपत्य जीवन और देहावसन आदि का विवेचन किया है। साथ ही मैंने उनके व्यक्तित्व के अंतर्गत तथा बहिर्गत अंशों को भी पेश करते हुए उन्हें प्राप्त सम्मानों की जानकारी दी है। इनके साहित्यिक कृतित्व का भी परिचय दिया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए हैं।

**द्वितीय अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु''**

इस अध्याय में कथावस्तु का स्वरूप तथा सक्सेना जी के 'सूने चौखटे' और 'सोया हुआ जल' इन दो उपन्यासों के कथावस्तु का विवेचन किया गया है। इसमें मुख्य पात्रों से संबंध कथा के साथ-साथ अन्य संबंध कथाएँ हैं जिनका मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध में संक्षेप में समावेश किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**तृतीय अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ''**

प्रस्तुत अध्याय में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ का विवेचन है। इसमें यथार्थ शब्द का अर्थ, यथार्थ का स्वरूप तथा सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य आदि का विवेचन किया है। इसके साथ-साथ विवेच्य उपन्यासों में उच्चवर्गीय समाज, मध्यवर्गीय समाज, निम्नवर्गीय समाज, सामाजिक भेदभाव, सामाजिक रीति-रिवाज, सामाजिक व्यवस्था, नये-पुराणे विचार तथा दमित वासनाओं का यथार्थ विवेचन किया गया है। अंत में अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**चतुर्थ अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र एवं चरित्र-चित्रण''**

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने पात्र एवं चरित्र-चित्रण के महत्व को प्रस्तुत किया है। इसके साथ मैंने विवेच्य उपन्यासों के प्रमुख पात्रों की विशेषताओं का विवेचन किया है। इसके अलावा गौण पात्रों की संख्या तथा उनका विवेचन प्रस्तुत अध्याय में मार्मिकता से किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए गए हैं।

**पंचम अध्याय - ''विवेच्य उपन्यासों की भाषा-शैली''**

इसमें सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में प्राप्त तत्सम, तद्भव तथा विदेशी, अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इसके साथ-साथ भाषा सौंदर्य के साधन में आवेशात्मक, उपदेशात्मक, पात्रानुकूल, गालियों से युक्त, व्यंग्यात्मक तथा मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि भाषा प्रयोगों को प्रस्तुत किया है। प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर,

गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक, संवाद तथा पूर्व दीप्ति आदि शैलियों के प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

**उपसंहार -**

सभी अध्यायों के अंत में मैंने उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है, जो उपन्यास के पूरे अध्याय का सार है।

**अनुसंधान की नई दिशाएँ -**

इसके अंतर्गत सर्वेश्वर जी के उपन्यास साहित्य पर स्वतंत्र रूप से जिन विषयों पर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है, ऐसे विषयों की सूची दी है।

**संदर्भ ग्रंथ सूचि -**

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन-कार्य में सहायक अधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची इसके अंतर्गत दी गई है।

**इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -**

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सक्सेना जी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों के कथावस्तु के संदर्भ में विवेचन किया है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सर्वेश्वर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सर्वेश्वर जी के उपर्युक्त दोनों उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण पहली बार किया गया है।
4. विवेच्य उपन्यासों के पात्रों की विशेषताएँ स्पष्ट की हैं।
5. विवेच्य उपन्यासों की भाषा-शैली का विवेचन एवं विश्लेषण किया है।

# ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन-कार्य में जिन विद्वानों तथा हितचिंतकों ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मुझे सहयोग दिया, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना प्रधान कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध शोध-निर्देशक श्रद्धेय गुरु डॉ. मोहन जाधव जी प्रवक्ता, हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के पथ-निर्देशन का फल है। मुझे बी. ए. से लेकर एम्. ए. तक आपका मार्गदर्शन मिलता रहा। एम्. फिल. उपाधि के लिए शोध-निर्देशक के रूप में आपकी मौजूदगी मेरे लिए बड़ी भाग्य की बात है। आपसे मुझे हमेशा प्रेम, प्रेरणा तथा उचित मार्गदर्शन मिलता रहा है। मैं आप तथा आपके परिवारजनों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डॉ. भारत सगरे (सातारा), जयंत जाधव (सातारा), कमलाकर कंगले (पंढरपुर) आदि का सहयोग तथा मार्गदर्शन समय-समय पर मिलता रहा। अतः उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मेरे लिए आपार कष्ट उठानेवाले मेरी माताजी सौ. पुष्पा चवरे और पिताजी गोवर्धन चवरे का आशीर्वाद मुझे सदैव सत्कार्य के लिए प्रेरणा देता रहा है। मैं अजन्म उनके ऋण में रहूँगा। साथ ही परिवार के चाचा नागनाथ चवरे तथा चाची सौ. सविता चवरे और दादी-श्रीमती इंदिरबाई चवरे आदि का आशीर्वाद मेरे लिए सदैव प्रेरणादायी रहा है। मैं उनका अजीवन ऋणी हूँ। मेरे बड़े भाई समाधान चवरे तथा भाभी धनश्री चवरे की प्रेरणा ने मुझे शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाई। मुझे हर समय प्रोत्साहन तथा चेतना जगानेवाले भाई सचिन चवरे का सहयोग बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अतः मैं इन सभी का अजीवन ऋणी हूँ।

मेरे लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में जिन मित्र परिवार का सहयोग मिला। वे इस प्रकार से - श्री. शिवाजी चवरे, श्री. वालचंद नागरगोजे, श्री. दीपक

तुपे, श्री. अभिजीत पाटील, श्री. अजित लिपारे, श्री. बाळासाहेब कदम, श्री. तानाजी हवालदार, श्री. किरण देशमुख, श्री. संतोष साळुंखे, श्री. नागेश कुटे, श्री. प्रदीप कोरके, श्री. मालोजी जगताप, श्री. शरद पवार, श्री. विवेकानंद मोरे, श्री. अमोल कुंभार, श्री. दत्तात्रय चव्हाण, श्री. नामदेव लवटे, श्री. टी. एस्. पाटील (सर) आदि तथा मनीषा भोसले, मोनिका कदम, रूपाली चव्हाण आदि का योगदान बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है। अतः इन सभी हितचिंतकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

संदर्भ ग्रंथों के बिना तो कोई भी लघु शोध-प्रबंध पूरा नहीं होता। अतः मैं लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथालय, राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथालय तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर आदि के ग्रंथपाल तथा कर्मचारी वर्ग के प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले अल्ताफ मोमीन का भी मैं आभारी हूँ।

अंत में इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. जयसिंग गोवर्धन चवरे)

स्थान :- सातारा

तिथि :- 31/12/2007